IJAER/ January-February 2018/Volume-6/Issue-4 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

जितेन्द्र निर्मोही के साहित्य में नारी चेतना

राजाराम धाकड़

शोधार्थी राज. कला कन्या महाविद्यालय कोटा

(कोटा वि. वि. कोटा राजस्थान)

सार

भारतीय संस्कृति की नारी शिक्षा, नौकरी–व्यवसाय तथा संविधान की नियम प्रणाली के तहत विशेष जागृत हुई है। समकालीन दौर की ममता कालिया ने दृढ़ दृष्टि से अपनी कहानियों की स्त्रियों को घर के दायरे से परे राजनीति तक टक्कर देने के लिए सजग किया है। देहाती नारी की कथा को आधार बनाकर ''नुगरी'' नाम से उपन्यास रचा है। अर्द्धपढ़ी–लिखी नारी और ऊपर से युवावस्था में विधवा हो जाना एक अभिशाप से कम नहीं है। समाज में उसको कितनी याचनाओं का सामना करना पड़ता है, इसका चित्रण किया गया है। ग्रामीण शब्दों का प्रयोग करने से यह उपन्यास और रोचक लगता है। जितेन्द्र निर्मोही जी बहुआयामी साहित्यकार रहे हैं। उनके द्वारा उनके काव्य में प्रकृति से लेकर सामाजिक चेतना का विकास स्पष्ट नजर आता है। उनके द्वारा समाज को दिया गया संदेश व सामाजिक भावना को उजागर करता है, निर्मोही जी के काव्य में व्यक्त संवेदना को स्पष्ट कर, सामाजिक महत्व को स्पष्ट करना कवि को समय के अनुसार परिवर्तनशीलता को अपने काव्य में अभिव्यक्त करना है।

प्रस्तावना –

समकालीन हिन्दी कहानी व उपन्यास साहित्य में नारी चेतना तथा उसकी परिवर्तनशील जीवनशैली का मार्मिक चित्रण समकालीन लेखकों ने किया है। भारतीय संस्कृति की नारी शिक्षा, नौकरी–व्यवसाय तथा संविधान की नियम प्रणाली के तहत विशेष जागृत हुई है। समकालीन दौर की ममता कालिया ने दृढ़ दृष्टि से अपनी कहानियों की स्त्रियों को घर के दायरे से परे राजनीति तक टक्कर देने के लिए सजग किया है। देहाती स्त्री की चेतनशीलता सामाजिक चेतना में व्यवस्था के प्रतिकार में दलित स्त्री की संघर्ष चेतना पदधिष्ठित स्त्री की अधिकार चेतना, धार्मिक चेतना के अन्तर्गत कुरीतियों के प्रति बदलते विचार प्रवाह, शुचिता के बदलते प्रतिमान आदि उपमुद्दों को उजागर किया है। राजस्थान के सीमान्त जिले झालावाड़ में जन्मे कवि जितेन्द्र 'निर्मोही' जी के बहुआयामी व्यक्तित्व में कविता के साथ–साथ कहानी, उपन्यास, संस्मरण, निबन्ध और हिन्दी–राजस्थानी में रचना, आलोचना तथा इतिहास लेखन के भी अमित गुण समाहित हैं। कवि के इस बहुमुखी व्यक्तित्व निर्मिति में तत्कालीन झालावाड़ शहर के साहित्यिक परिवेश का विशेष योगदान कहा जा सकता है। उस समय के साहित्य सृजन में हिन्दी, ब्रज और उर्दू भाषा साहित्य की त्रिवेणी अपने–अपने उत्कर्ष पर थी। उसका सीधा प्रभाव काव्य की ओर प्रवृत्त नई पीढ़ी पर पड़ रहा था और उस लघु शहर में काव्य के विविध रूप/साहित्यकार निखर कर सामने आ रहे थे। उस दौर का विवरण निर्मोही जी की कृति ''सफ़र दर सफ़र'' में देखा जा सकता है। उक्त परिवेश के प्रभाव से जितेन्द्र निर्मोही का मन अछूता न था। 'निर्मोही' के मन की कोमल भावनाएँ धीरे–धीरे रचना का

रूप धर कर हिलोरें लेने लगी। जितेन्द्र निर्मोही की किशोरवय के बाद रचनाएँ संगोष्ठी के तटबंध तोड़कर, कवि सम्मेलनों के मंचों की शोभा बढ़ाने लगी। शनैः–शनैः 'निर्मोही' एक बेहतरीन रचनाकार रूप में स्थापित हो गए। ये उनकी युवा अवस्था का दौर था। झालावाड़ शहर से गागरोन के जंगल ज्यादा दूर नहीं है। वर्षाकालीन ऋतु के बाद तो गागरोन की वन सम्पदा हर किसी का मन मोहने लगती है। कवि 'निर्मोही' भी इस आकर्षण से अछूते नहीं थे, प्रकृति के इस चितेरे कवि निर्मोही का कवि मन और गागरोन के जंगल तथा उनके आजीविका उपार्जन हेतु वन विभाग में नौकरी, सबकुछ मिलाकर 'कवि' को प्रकृति को निकट से देखने–परखने और समझने का प्रयास था। जिसके परिणामस्वरूप कवि–मन की कविताओं का प्रथम प्रस्फुटन 'जंगल से गुजरते हुए' प्रकृति काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। यह 1995 की बात है। यह कवि का प्रथम प्रकृति काव्य था, जिसमें कवि ने अपने भावों को रचते हुए प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर मनुष्य के विराट रूप को प्रकृति से जोड़ा। कवि का यह कहना कितना सच है – न भागो मोटर के संग/वृक्ष के साथ/खड़े होकर बात करो।– जंगल से गुजरते हुए–पृष्ठ 89 (आत्म–बोध कविता) आज इस काव्य संग्रह ''जंगल से गुजरते हुए' का रजत जयंती संस्करण आ चुका है, जिसमें देश के मूर्धन्य विद्वानों के कृति के बारे में मत सम्मलित हैं।

महत्व –

नारी चेतना में निर्मोही जी ने एक विशेष ग्रामीण शैली का प्रयोग किया है, ग्रामीण जीवन को अपनी आँखों से देखा और समाज में होने वाले अत्याचारों को अपनी हाड़ौती व राजस्थानी भाषा में लिपिबद्ध किया है। देहाती नारी की कथा को आधार बनाकर ''नुगरी'' नाम से उपन्यास रचा है। अर्द्धपढ़ी–लिखी नारी और ऊपर से युवावस्था में विधवा हो जाना एक अभिशाप से कम नहीं है। समाज में उसको कितनी याचनाओं का सामना करना पड़ता है, इसका चित्रण किया गया है। ग्रामीण शब्दों का प्रयोग करने से यह उपन्यास और रोचक लगता है। किस तरह नुगरी अपने जीवन में संघर्ष करती है और अपनी चेतना से अपने घर–परिवार का जीवन–यापन करती दिखाई गई है।

जितेन्द्र निर्मोही जी बहुआयामी साहित्यकार रहे हैं। उनके द्वारा उनके काव्य में प्रकृति से लेकर सामाजिक चेतना का विकास स्पष्ट नजर आता है। उनके द्वारा समाज को दिया गया संदेश व सामाजिक भावना को उजागर करता है, निर्मोही जी के काव्य में व्यक्त संवेदना को स्पष्ट कर, सामाजिक महत्व को स्पष्ट करना कवि को समय के अनुसार परिवर्तनशीलता को अपने काव्य में अभिव्यक्त करना है। समाज की हलचलों को सभी के सामने लाकर नव चेतना देना भी कवि का एक उद्देश्य होता है। निर्मोही जी की साहित्यिक यात्रा को अनेक पहलू को छूना व उनके द्वारा प्राप्त संदेश को समाज तक पहुँचाना मेरे शोध का मन्तव्य है। निर्मोही जी कभी एक पहलू से बंधकर नहीं रहे। उनके द्वारा हमेशा नवीन रास्तों को ढूंढना व उन पर स्वयं को चलाना फिर समाज को चलने के लिए आग्रह करना है। मैंने पाया है वो प्रतिदिन नई पीढ़ी के रचनाकारों से जुड़े रहते हैं और मार्गदर्शन देते रहते हैं। उनके द्वारा अनेक आयामों को बड़ी कुशलता के साथ पेश किया गया है। यही कारण है आज हाड़ौती अंचल में विशेष तौर पर राजस्थानी साहित्य की फसल लहलहा रही है। निर्मोही की व्यष्टि से समष्टि की भावना आज समाज के सामने आकर एक नवीन संदेश का संचार कर रही है जिसमें मानव कल्याण की भावना समाहित है। सभी मानव मानव से जुड़े, यह उनका आग्रह रहा है। निर्मोही जी हमेशा सामाजिक पहलू को लेकर बड़े सजग रहे हैं। उनके हृदय में हमेशा मानव व समाज के सम्बन्धों को सुधारने का विचार चलता रहता है। उनके द्वारा सामाजिक सुधार व मानव विकास की भावना को एक उद्घोष के रूप में साहित्य में

अभिव्यक्त किया है। उन्हें रक्तदान संस्थाएँ, रोग निदान संस्थाएँ, पर्यावरण संस्थाएँ भलीभाँति जानती हैं। उनके काव्य में एक नवीन संदेश का संचार होता है। मेरे शोध का उद्देश्य निर्मोही जी की काव्य भावना को स्पष्ट करना व उससे प्राप्त संदेश को जनता तक पहुँचाना है। यहाँ इस संदर्भ में कुछ बिन्दु उद्धरित कर रहा हूँ –

उद्देश्य –

1ण समाज में नारी का स्थान

2ण नारी शोषण के विरूद्ध आवाज

3ण जितेन्द्र निर्मोही का प्रकृति प्रेम

4ण निर्मोही जी के काव्य में परिवर्तनशीलता

अध्ययन –

जितेन्द्र निर्मोही जी ने अपने राजस्थानी उपन्यास नुगरी में सामाजिक परिवेश का जो चित्रण किया है, बाल–विधवा हो जाने पर स्त्री अपने आप में एक कमजोर हो जाती है। समाज के रीति–रिवाज उसके जीवन पर भारी पड़ने लगते हैं। समाज के मनचलों लकड़बग्गों से अपने चरित्र को सुरक्षित रखती है। अपनी सूझ से अपना जीवन–यापन करती नजर आती है। बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक वर्णन किया गया है। भारत देश में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान उच्च रहा है, लेकिन समाज की बदलती विचारधारा ने इसको झकझोर कर रख दिया है। नारी से समाज का निर्माण होता है। कहा गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। आज नारी को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। समाज में नारी शोषण की दासता देखते ही बनती है। नारी इस युग में सभी क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान कर रही है, फिर भी उसको पूरा सम्मान नहीं दिया जाता है। नारी का शोषण अनेक प्रकार से किया जाता है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री अपना स्थान सुरक्षित नहीं कर पा रही है। निर्मोही जी ने नुगरी उपन्यास में नारी की कथा को अपने शब्दों में बयाँ किया है। नुगरी एक विधवा स्त्री पात्र है, जो अपने जीवनकाल में अनेक समस्याओं का सामना करती हुई अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ती रहती है। निर्मोही जी ने नारी शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने का प्रयास अपने साहित्य से किया है।

''अस्यो घूँघट–पल्लू लेबा सूं काम नं चालैगो''।

स्त्री को आत्मबल प्रदान कर अपना काम स्वयं को ही करना पड़ेगा। –(नुगरी, पेज नं. 8)

नुगरी बालपन में विधवा हो गयी, पति बुरी संगत में पड़ गया व अपने जीवन का अन्त कर लिया। लेकिन ईश्वर कुछ लेता है तो कुछ देता भी है। पति की जगह लाड़बाई (नुगरी) की नौकरी लग जाती है। उसका विधवापन अब नौकरी के सहारे चलने लगता है। अपने पुत्र जोगाराम का पालन–पोषण करती है।

''अब लाड़बाई उफणती नंदी सूं ठहर्‌यी नदी को बेहतो पाणी होबा लागी छी। उं का चरित मं बदलाव हो र्‌यो छो। –(नुगरी, पेज नं. 9)

नारी हमेशा समाज का भला सोचती है। निर्मोही जी ने नुगरी की सोच को एक सामाजिक विचारधारा का निर्वाह करते हुए दिखाया है। समाज के सभी कार्यों में लाड़बाई अपनी भागीदारी सभी से आगे रखती है, सभी रीति–रिवाजों व सामाजिक भावना का अच्छे से पालन करती है।

नुगरी उपन्यास एक सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ आधुनिक पारिवारिक जीवन से जुड़ा दस्तावेज है। समय के परिवर्तन को अच्छे से उजागर किया गया है। लाड़बाई ने जीवन के प्रत्येक पहलू को निभाया है। अपने पुत्र जोगाराम का विवाह अपने रिवाज से करती है। परिवार का पालन–पोषण अपनी सूझ से करती नजर आई है। अपने कार्य में कभी–भी लाड़बाई आलस नहीं दिखाती है। स्त्री की क्या जिम्मेदारी होती है, इसका हमेशा ध्यान रखती है।

''जद सतरंगी लहरियो सावन रो ललचावै।

कॉची कंवळी देह पै इन्द्रधनुष मंड जावै।। –(नुगरी, पेज नं. 51)

''थाँकी याद आवे छै जी, थाँकी याद आवै मन में,

बेगा आज्यो जी साहिब जी, थाँकी याद आवै छै।'' –(नुगरी, पेज नं. 53)

इस तरह नुगरी अपने जीवन का मजा लेती हुई अपना समय निकालती है। दफ्तर में नुगरी अपनी अलग धुन में चलने वाली थी। सभी का सम्मान करना परन्तु करना अपने मन की, जो अपने मन को अच्छा लगे। स्वाभिमान के साथ जीना। नुगरी उपन्यास में नारी शिक्षा पर भी प्रकाश डाला गया है। लाड़बाई (नुगरी) एक अर्द्ध पढ़ी–लिखी महिला है, पर उसके मन में स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने का सपना होता है। उसको वह एक स्कूल खोलकर पूरा करती है। शिक्षा से स्त्री की चेतना को जागृत करके समाज में स्थान दिलाती है। नारी शिक्षा से एक नवीन धारणा को जन्म दिया जा सकता है, शिक्षा के लिए प्रयास करके स्कूल का संचालन करती है। उसकी सोच थी कि अगर नारी शिक्षित होगी तो समाज का उत्थान होगा व स्त्री को समाज में एक उच्च मुकाम हासिल होगा। नारी की भावना हमेशा समाज का कल्याण करने की होती है। आज भारत देश के अन्दर स्त्री शिक्षा को महत्व दिया जाता है। लगभग सभी क्षेत्रों में नारी ने अपनी प्रतिभा को दिखाया है। अब समाज की स्थिति सुधरती नजर आ रही है।

''– कोकिला तू कतनी पढ़ी–लिखी है?

– एम.ए. ताँईं

– एम.ए. काँईं में कर्‌यो?

– हिन्दी में।'' –(नुगरी, पेज नं. 85)

नुगरी अपने जीवनकाल में एक मन्दिर का निर्माण भी करवाती है, जो कि उसके धार्मिक होने का प्रमाण है। नुगरी का एक चरित्रवान आदर्श नारी का रूप सामने आता है। अपने विधवापन में कभी–भी उसने दाग नहीं लगने दिया। जो भी उसकी तरफ बुरी नजर डालता उसका जवाब भी उसने अच्छे तरीके से दिया है। समय का फायदा उठाना वह अच्छे से जान गई थी। जैसा देश वैसा वेश करना उसने सीख लिया था। जीवन के हर एक परिवर्तन से नुगरी कुछ सीख पाई है। समय कालचक्र सभी का अच्छे से

मांझ देता है। दुनिया की चाल को जिसने भी सीखा है, उसने अपना मुकाम हासिल किया है। बदलते समय के अनुसार नुगरी ने भी अपने आप को बदल लिया था।

समय के अन्तिम पलों में नुगरी का आध्यात्मिक भावना का विस्तार भी पाया गया है। अपनी आत्मिक शक्ति के सहारे अपने गुजरे समय का निरीक्षण करती है। सभी दृश्य उसके सामने साकार से बनकर उभरते हैं। जिस प्रकार मनुष्य अन्तिम क्षणों में ईश्वर की मिलन कामना करता है, उसी प्रकार नुगरी भी आत्मा का मिलाप परमात्मा से करना चाहती है। उपन्यास का अन्त शान्त रस के साथ होता है।

''वै बी सोच र्‌या छा काँईं संत अर काँईं पंत। ई जमी पै कतना लोग सत का सरज्या छै। जमाना में ज्ये करम हो ज्यावै कर ल्यो अर आगे बढ़ो। लाड़ बी अस्याँ जिंदगानी में आगे बढ़ी अर अधती ई गी।। या ई छै लाड़कंवर (नुगरी) की कहाणी।''

जितेन्द्र निर्मोही ने राजस्थानी भाषा में गागर में सागर भरने का एक सफल प्रयास किया है।

हाड़ौती व राजस्थानी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान दिलाने का कदम उठाया है, जो सफल भी हुआ है। ''कफन का पायजामा'' कहानी में जितेन्द्र निर्मोही की एक अलग नवीन शैली का विकास देखने को मिला है। इसकी सराहना पूरे साहित्य जगत में की गई है।

प्रकृति की गोद में रचे–बसे इस शब्द साधक की रचनायात्रा का आगामी काव्य–पुष्प 'धूप के साये में चाँदनी' सन् 1999 ई. में प्रकाशित हुआ। संकलन की इन कविताओं से आभास होता है कि कवि मन को समय का जादू, कल्पना के मनोरम आकाश में अधिक समय तक विचरने ही नहीं देता है। कवि का बेचैन मन 'धूप के साये में चाँदनी' खोजने को आतुर दिखाई देता है। वह श्रृंगार की अपूर्व, मन–भावन अभिव्यक्ति प्रदान करता है –

लाज की अग्नि–रेखा को अब लांघिये/नेह के अंक में अब शयन कीजिये/पीर के क्षीर को छोड़िये मोहिनी/अश्रु वाले नयन–उन्नयन कीजिये/..... मैं सुदर्शन का स्वामी कहूं सुमुखी/तोड़िये–तोड़िये ये बुझी भंगिमा/वैणियाँ माँगती नेह का अवतरण/उर्वशी काम का संचयन कीजिये। धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 20 से (1999) जितेन्द्र निर्मोही श्रृंगार रस के बड़े गीतकार हैं। उन्होंने हाल ही में एक शोधग्रंथ प्रकाशित कराया है। ''राजस्थानी काव्य में सिणगार'' इसे विद्वान राजस्थानी श्रृंगार का इतिहास साहित्य कह रहे हैं।

निर्मोही के कवि मन में एक अजीब–सी प्यास है। जो सच की तलाश में अपने–पराये सभी को अपनेपन से टटोल आती है। यहाँ रचनाओं में कवि का मन, वर्तमान समय के महानगरीय बोध, जो समाज में व्याप्त मानवता के आत्मीय सम्बन्धों को लीलता जा रहा है, की उसकी सारगर्भित अभिव्यंजना करता है –

अपने ही शहर में अंजान हुए/अपने ही घर के मेहमान हुए/गीतों ने रूख मोड़े, गज़लों ने मुख मोड़े/दिलकश संवादों ने, सामाजिक साथ छोड़े/परिचय से भटके बेनाम हुए/अपने ही घर में .....। धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 25 (1999) यह सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण गीत है।

'निर्मोही' का कवि–मन समय को परख कर चलता है। वह अच्छी तरह से जानता है कि मानव जीवन के साथ–साथ संघर्ष सदैव बना रहेगा। जब संघर्ष है, तब पीड़ा है, वेदना है और उपहार में नियति ने दुखों

की मालाएँ सजा रखी हैं। तब इनसे घबराना कैसा? इन्हें तो आपस में बाँटकर ही विजय पाना श्रेयस्कर है –

आँसू के खारेपन में भी, दुनिया के खारों की बातें/

सारे खार सहूँगा कैसे? थोड़ी तुम भी लो सौगातें/

धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 27 (1999)

जीवन की इन तमाम विषमता परिस्थितियों से जूझकर भी कवि का मन जीवन जीने का

मूलमंत्र सर्व समाज को देता है –

कम ही होंगे जिन्दगी के ग़म/नेक राह में रखे कदम/

धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 28 (1999)

इतना ही नहीं, जितेन्द्र 'निर्मोही' अपने जीवनानुभव को एक नया रूप देकर 'मधु घट' को प्रेरणा का 'घट' बना देते हैं और कहते हैं –

जब उपेक्षित/कर देते हैं/तमाम अपने ही/लोग और/किंम्–कर्त्तव्य विमूढ़ होने पर/यकायक कोई/हमसफर ही दिखाई/नहीं देता/तब समसामयिक ऐसे ही/क्षणों में/वक्त से जूझते–जूझते/तय करने लगता है/जीवट मनुष्य/एक अनजान–सा सफर/तब लम्हा–लम्हा/लहर–लहर/जिन्दगी के समंदर को/मथा जाता है/तो निकल ही आता है/कोई/मधु घट/

धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 30 (1999)

अन्ततः 'धूप के साये में चाँदनी' के रचनाकार सुख–दुःख को सम्मिलित कर रेखांकित करते हुए, जीवन के अर्थ को ध्वनित कर ही देता है –

चाँदनी धूप के साये में/चलना जानती है/यही उसकी नियती है/यह जानती है कि/धूप स्वीकार नहीं करती/चाँदनी के साये में चलना/धूप अगर चाँदनी के/साये में चल रही होती/तो यह जिन्दगी इस तरह मयस्सर नहीं होती/चाँदनी सर्द अहसास/का अंजाम समझती है/चाँदनी धूप को सहती है/पिघलती है/चाँदनी जिन्दगी का सुकूं/होती है/चाँदनी प्यार की एक गुफ्तगू होती है/चाँदनी जब भी/जिन्दगी को खाती है/धूप ढल जाती है/सहर होती है। शायद यही जिंदगी है। यहाँ धूप दुख का प्रतीक है और सुख चाँदनी का। धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 32 (1999)

कवि निर्मोही ..... मन के धनी है। अपनी धुन में रमें रहते हैं, तभी तो वह सम्पूर्ण सृष्टि को संकेत में कवि–पथ का भान कराते जाते हैं –

ऐसी दौलत जो सुकूं देती है/वो सुख़नवर के पास रहती है/

वो तेरे नक्श पां चले भी क्यों?/उसे कुछ और ही धुन रहती है/

धूप के साये में चाँदनी – पृष्ठ 35 (1999)

अलमस्त ..... काव्य अंदाज के धनी जितेन्द्र 'निर्मोही' केवल जीवन के इस पक्ष के ही रचनाकार नहीं है, उनकी कृति 'भोर पर चढ़ आई धूप' वर्ष 2012 में प्रकाशित हुई। जिसमें बदलते समय की सरगम है। यहाँ कवि निजमन की भाव कविता से मुक्त होता हुआ दिखलाई पड़ता है। 'भोर पर चढ़ आई धूप' में कवि की दृष्टि 'निज मन की व्यथा' के दायरे से बाहर निकल कर, सम्पूर्ण राष्ट्र और मानवता के प्रति समर्पित भाव से भरी, लोक कल्याण भावना की प्रतीती कराती नजर आती है। जिसमें समाज में आय नयी सदी के बदलाव के दृश्य हैं।

कवि ने स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद की परिस्थितियों में देश के जन–मन की आशा–आकांक्षाओं, बदलावों के मध्य स्थापित हमारे आदर्शों का बहुत ही सूक्ष्मताओं के सटीक चितराम दिखाने का प्रयास किया है। जैसे ही देश आजाद हुआ, देश के जन–मन में एक नयी आशा का संचार हुआ। स्वतंत्र राष्ट्र के नये स्वप्न भी आकार लेने लगे। जिनके भेद–भाव रहित, एक समता मूलक समाज की नव चेतना समाहित रही। देश प्रत्येक नागरिक को समुचित विकास की गंगा का प्रतिभागी बनाना तय था कुछ इन्हीं लोककल्याणकारी, आदर्शों का महिमामयी और मीठे उलाहनों की प्रतीक है 'भोर पर चढ़ आई धूप'।

यह धूप ..... शायद देश के जनमन द्वारा देखे गये स्वप्नों के अनुकूल नहीं वर्तमान समाज के भौतिक मूल्यों ने किस कदर हमारे आदर्श परिवार और जीवन मूल्यों को झकझोर रख दिया है। उसकी हमने कल्पना ही नहीं की थी। यह समय तो लोकतंत्र को विकृत करने वाला बन गया है। भोर की यह धूप हमें सता रही है। सत्ता जन जन पर हावी है, उसका प्रभाव सम्पूर्ण सामाजिक संरचना को ही क्रूर और कुरूप करने में संलग्न दिखाई देने लगता तो ''भोर पर चढ़ आई धूप'' सामने आती है।

कवि के शब्दों में 'भोर पर चढ़ आई धूप' आजादी की आनंदमयी भोर और उसके तुरन्त बाद जर्द–तपिश महसूस होने की स्वानुभूति है।

आज सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के क्षरण का समय है, तब कवि का मन और बेचैन हो उठता है। वह स्वयं से ही सवाल करने लगता है – ''अब क्या हो गया है हमारे मौसम को?'' इस बदलते परिदृश्य में 'निर्मोही' खरी–खरी कहने की हिम्मत दिखाते हैं, वो कहते हैं 'क्या है हमारी विवशता?' कि हम हमारे संस्कारों की खरीददारी को भी नहीं रोक पा रहे हैं। इस प्रकार कवि ने 'भोर पर चढ़ आई धूप' की अनेक रचनाओं में आजादी और उसके बाद के समय में आई जीवन मूल्यों की टूटन को अंकित करते हुए लिखा है –

बहुत/परिवर्तन का समय/है शायद/दिखाई नहीं देता/सूरज से आसमानी/संवाद का रिश्ता/इसी प्रकार समाज की बदरंग दशा को दर्शाती कविताओं में, 'बदलाव', 'शायद' 'अंतर पीड़ा' और 'अब' आदि है। जिनके मध्य में जीवन का सत्य समाहित है। हम सब इस बदलाव को अनुभव तो करते हैं, पर उसके प्रति उदासीन भी बने हुए हैं। या कि यह हमारी लाचारी है? ''भोर पर चढ़ आई धूप'' में कवि ने हमारे सामाजिक ताने बाने को खोलकर रख दिया है। भोर पर चढ़ आई धूप, पृष्ठ 10

आज जब सामाजिक पतन अन्तहीन सीमाओं तक जा पहुँचे हैं। तब इस काव्यकृति से एक छोटी–सी कविता 'नियति' सामने आती है जो आपके समक्ष है –

एक नन्हीं सी/चिड़िया, जो सहवास का/भावार्थ नहीं जानती थी/कालान्तर में बना दी गई/अप्सरा/जो स्वर्ग के नशे में नाचती ही रही/नाचती ही रही/देवताओं के बीच/और/भक्तगण मौज में/बजाते रहे/तालियाँ/– भोर पर चढ़ आई धूप, पृष्ठ 16

'स्त्री' की नियति को सामाजिक संदर्भों से जोड़ती यह कविता मन को झकझोर देती है। समय के संक्रमण से जीवनशैली में उतर आए बदलावों को भी कवि ने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि के साथ, कलम से रूपाकार किया है –

बहुत बेतरतीब/हो गया हूँ मैं/समय के संक्रमण के साथ/कभी सफर में अपना हाथ/कभी अपना पाँव/भूल आता हूँ/दिल भी अब पहले सा/समंदर जैसा न रहा/न ही दिमाग ही/आसमान की तरह साफ/– भोर पर चढ़ आई धूप, पृष्ठ 20 (बदलाव)

समाज से जीवन की रसमयता लुप्त प्राय है और उदात्त भावनाएँ मृत, आज भौतिक आकांक्षाएँ महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे मुखौटैधारी व्यक्तित्व समाज में हर कई मिलने लगे हैं। 'भोर पर चढ़ आई धूप' को 'एक लघुकथा', 'तान', 'प्रयोगवादी', 'बेताल प्रश्न', 'आम कर्मचारी' आदि रचनाएँ इसकी साक्षी है। – भोर पर चढ़ आई धूप में संकलित

कविता 'उसका मुन्ना'(पृष्ठ 65) और 'विवशता'(पृष्ठ 34) .....सांस्कृतिक पराभाव की ओर संकेत करती नज़र आती है, वहीं पूर्व–पश्चिम के द्वन्द को 'उनका देश' स्पष्ट करती है। स्वर्णिम अतीत हमारे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। कवि 'निर्मोही' ने बार–बार पीछे मुड़कर देखते हुए, वर्तमान समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया है। 'उस समय का आदमी', 'पुराने मित्र', 'भूतकाल', 'धूमताल' एवं 'एलबम का पन्ना' जैसी कविताएँ उनकी प्रेरणा बन जाती है।

राजनीति में आए अधःपतन की साक्षी उनकी रचनाएँ 'बहुरूपिया–जादूगर'(पृष्ठ 50) .... स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति उपेक्षा का बर्ताव बताती एक सफल रचना है। कवि ने अध्यात्म के स्पर्श केसाथ अपनी बात कहने का प्रयास जिन कविताओं के माध्यम से किया है, उनमें 'दिगम्बर'(पृष्ठ 24), 'गोपाल'(पृष्ठ 30), 'सृजन'(पृष्ठ 40), 'पुनर्जन्म'(पृष्ठ 56) आदि है।

(भोर पर चढ़ आई धूप में संकलित कविताएँ)

अस्तु 'भोर पर चढ़ आई धूप' का रचनाकार जहाँ हमें व्यक्ति के सामाजिक महल से जोड़कर, उसके समाष्टिगत वैशिष्ट्य का महत्व अंकन करता है, वहीं दूसरी ओर आदर्श जीवन मूल्यों में आई विकृत मानसिकता से भी रूब: कराता है। सत्य तो यह है कि 'भोर पर चढ़ आई धूप' की कविताएँ मनुष्य के प्रति विश्वास और भविष्य के प्रति शंका दोनों एक साथ, वर्तमान की जमी पर खड़े होकर देखने का प्रयास है, इसमें अगले दिनों की वापसी की आशाएँ हैं, तो समय की कठिनाईयों का प्रतिरोध भी। इन्हीं सब के बीच समझाने, सुलझाने के प्रथम प्रयास से उपजी कविताएँ हैं। उनकी सद्य प्रकाशित काव्यकृति 'मैं भी गीत सुना दूँ' सामाजिक सरोकारों से लबरेज है, जो एक तरह से उनके जीवन अनुभवों की

सम्पदा और उनका अक्स है। यह कृति उनका नवगीतकार स्वरूप दिखाती है। उनका काव्य विशद् चर्चा मांगता है।

निष्कर्ष

जितेन्द्र निर्मोही की किशोरवय के बाद रचनाएँ संगोष्ठी के तटबंध तोड़कर, कवि सम्मेलनों के मंचों की शोभा बढ़ाने लगी। शनैः–शनैः 'निर्मोही' एक बेहतरीन रचनाकार रूप में स्थापित हो गए। ये उनकी युवा अवस्था का दौर था। झालावाड़ शहर से गागरोन के जंगल ज्यादा दूर नहीं है। वर्षाकालीन ऋतु के बाद तो गागरोन की वन सम्पदा हर किसी का मन मोहने लगती है। कवि 'निर्मोही' भी इस आकर्षण से अछूते नहीं थे, प्रकृति के इस चितेरे कवि निर्मोही का कवि मन और गागरोन के जंगल तथा उनके आजीविका उपार्जन हेतु वन विभाग में नौकरी, सबकुछ मिलाकर 'कवि' को प्रकृति को निकट से देखने–परखने और समझने का प्रयास था। जितेन्द्र निर्मोही जी ने अपने राजस्थानी उपन्यास नुगरी में सामाजिक परिवेश का जो चित्रण किया है, बाल–विधवा हो जाने पर स्त्री अपने आप में एक कमजोर हो जाती है। समाज के रीति–रिवाज उसके जीवन पर भारी पड़ने लगते हैं। समकालीन हिन्दी कहानी व उपन्यास साहित्य में नारी चेतना तथा उसकी परिवर्तनशील जीवनशैली का मार्मिक चित्रण समकालीन लेखकों ने किया है।

संदर्भ ग्रन्थ –

1ण जितेन्द्र निर्मोही – उजाले अपनी यादों के (संस्मरण कृति) 2012, अपोलो प्रकाशन जयपुर

2ण जितेन्द्र निर्मोही – भोर पर चढ़ आई धूप (काव्य संग्रह) 2012, बोधी प्रकाशन जयपुर

3ण जितेन्द्र निर्मोही – ई बगत को मिजाज (राजस्थानी काव्य) 1999, हितेषी ट्रेडर्स लाड़पुरा, कोटा

4ण मृदुला जी – ''बर्फ की बारिश'' कहानी

5ण चित्रा जी – ''इस हमाम में'' कहानी

6ण दीप्ति जी – ''आत्मघात''

7ण महादेवी वर्मा – ''भक्तिन'' कहानी

8ण चित्रा जी – ''शून्य'' कहानी

9ण दीप्ति जी – ''एक और सीता'' निबन्ध

10ण मृदुला जी – ''तीन किलो की छोरी''

11ण चित्रा जी – ''लकड़बग्घा'' कहानी

12ण मृदुला जी – हरी बिंदी, मेरा

13ण ममता जी – रोशनी की मार